

आधुनिकता की दृष्टि से: 'चौराहे पर' एक विश्लेषण

डॉ. मोहम्मद इमरान खान

अध्यक्ष- हिंदी विभाग, एम०जी०एम० कॉलेज संभल (U.P) Email-mohdimranm@gmail.com

सारांश- केदारनाथ कोमल द्वारा रचित 'चौराहे पर' काव्य संग्रह में आधुनिक जीवन के संघर्ष और कठिनाइयों की गहरी संवेदना उभर कर सामने आई है। कवि की कविताओं में उनकी जीवन यात्रा जो आधुनिकता, मौलिकता, युग सापेक्षता के अनुरूप है वह जीवन की सच्चाई ईमानदारी आत्मविश्वास और लोगों के भोगे हुए जीवन का सहज योग बनकर कवि को आस्थावान और चेतनावन बनती है। इस काव्य संग्रह को आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं की दृष्टि से देखा जाए तो बहुत से आधुनिकता के पहलू हमारे समक्ष खड़े हो जाते हैं।

कवि ने बहुत ही मार्मिक ढंग से समाज को चित्रित किया है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में मनुष्य अपनी संपूर्ण गति से दौड़ रहा है। किस तरह से वह कुण्ठा, संत्रास एवं अजनबीपन में अपनी जिंदगी गुजार रहा है। किस तरह से दिन प्रतिदिन उसकी आस्था और विश्वास का खून हो रहा है फिर भी वह समय और समाज के साथ सुरताल बिठाने का निरंतर प्रयास कर रहा है। कोमल जी ने इस काव्य संग्रह में मानव जीवन की खोई हुई मर्यादा, कुण्ठा, संत्रास तथा मनुष्य के संघर्षशील जीवन की बड़े ही सुंदर शब्दों में यथार्थपरक अभिव्यक्ति की है। कवि केदारनाथ कोमल का यह प्रथम काव्य संग्रह 1968 में समकालीन प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। इस काव्य संग्रह में 37 कविताएं हैं जो मनुष्य को ऐसे चौराहे पर लाकर खड़ा करती हैं। जहां से वह अपने लक्ष्य की ओर जा सके। इन कविताओं की भाषा इतनी सरल तथा भाव इतने अधिक गहन है कि पाठक के मन मस्तिष्क पर पूरी तरह छा जाते हैं। इस संग्रह की कुछ कविताएं इतनी छोटी हैं कि जो बड़ी अटपटी सी महसूस होती हैं लेकिन भाव एवं संरचना की दृष्टि से बहुत ही मार्मिक है। इन कविताओं में कवि ने आधुनिक मनुष्य के जीवन संघर्ष एवं समस्याओं को इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि वह समाज पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): आधुनिक जीवन संघर्ष, यथार्थपरक अभिव्यक्ति, कुण्ठा और संत्रास, केदारनाथ कोमल, मानवीय मर्यादा, चौराहे पर, मार्मिकता

प्रस्तावना- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस काव्य संग्रह की भूमिका में लिखा है -"कवि ने उपदेश या भाषण का रास्ता कहीं नहीं अपनाया है। जीवन को गहराई से पकड़ना और उसे जड़ता से मुक्त कर चैतन्य की ओर ले जाना ही कवि का लक्ष्य प्रतीत होता है। वह पाठक को ऐसे भावनात्मक चौराहे पर लाकर खड़ा करते हैं जहां से वे अपने गंतव्य लक्ष्य और मार्ग का निर्माण स्वयं कर सकें।"¹ जड़ता से मुक्त कर चैतन्य की ओर ले जाना ही आधुनिकता का प्रस्थान बिंदु है। उक्त काव्य संग्रह पर आधुनिकता बोध की दृष्टि से विचार करने से पूर्व हमें आधुनिकता पर विचार कर लेना चाहिए। वैसे तो मेरे विचार से आधुनिकता मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास बोध की प्रक्रिया है प्रत्येक युग अपनी समकालीनता में आधुनिक ही होता है। इसलिए आधुनिकता को समकालीनता में ही खोज सकते हैं क्योंकि आधुनिकता बौद्धिकता का ही परिणाम है। जो हमें मानवीय प्रगति की सूचना देती है यही मानवीय प्रगति हमें अभिनव जीवन दृष्टि एवं नवीन चिंतन का बोध कराती है।

आधुनिकता के संदर्भ में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किए हैं। वर्तमान में आधुनिकता एवं समकालीनता दोनों समाहित होते हैं। आधुनिक प्राचीन एवं मध्ययुगीन गुण अवस्था एवं परिणाम का होता है अभिप्राय यह है कि प्राचीन एवं मध्ययुगीन अवस्था एवं परिणाम आदि अनेक परिस्थितियों एवं वातावरण के परिणाम स्वरूप बौद्धिक कल्पनाएं विभिन्न परिवर्तनों को ग्रहण करती हुई अत्यंत नवीनतम रूप में दृष्टिगोचर होने लगी, इसे ही आधुनिकता की संज्ञा दी गई। डॉ.अजब सिंह अपनी पुस्तक में लिखते हैं -"आधुनिक युग की सांसारिक व्यस्तता में व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व एवं उसकी पहचान खो गई है। इस खोए हुए व्यक्तित्व की खोज प्रक्रिया की संज्ञा आधुनिकता है।"²

यह मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास बोध की प्रक्रिया होने के कारण आज तक कोई भी मापदंड स्थापित नहीं कर पाई है, क्योंकि यह आज भी अपनी स्थिति में गतिशील है। यही वजह है कि इसकी कोई उपयुक्त परिभाषा नहीं है, इसलिए आधुनिकता को कभी परंपरा में खोजने की कोशिश की गई तो कभी परंपरा से हटकर देखा गया। कभी इस समकालीनता से जोड़ा गया तो कभी बौद्धिकता से। आधुनिकता आदिकाल से लेकर आज तक विकासमान है। इसलिए इसके किसी भी दौर पर अंगुली रखकर यह नहीं कहा जा सकता कि यह आधुनिकता है। डॉ.इंद्रनाथ 'मदान' आधुनिकता को प्रक्रिया के रूप में ही मानते हैं - "आधुनिकता एक प्रक्रिया है, इसमें बुद्धिवाद का निरूपण भी आता है और खण्डन भी।"³

यह प्रक्रिया है तो फिर प्रक्रिया किसकी है, तो यह प्रक्रिया मध्यकालीन रूढ़ियों, अंधविश्वास एवं रुढ़ परंपराओं से बाहर निकालने की प्रक्रिया है तथा बुद्धिमान बनाने की, धर्म के सही रूप पर पहुँचने की प्रक्रिया है। डॉ. इंद्रनाथ मदान - "आधुनिकता एक प्रक्रिया होने के कारण एक से अधिक दौरों से गुजरती है और आज भी जारी है। इसलिए इसके किसी एक दौर पर अंगुली रखकर यह कहना कठिन है कि यह आधुनिकता है।"⁴

उद्देश्य - आधुनिकता का अर्थ केवल यह नहीं की नए जमाने का अथवा नए फैशन का लिबास पहन लिया या हैप्पीकट अथवा फैशनेबल कटिंग करा ली या आलीशान कोठी अथवा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त किसी महल में रहना ही आधुनिकता नहीं है। आधुनिकता तो मनुष्य की सोच और विचारों से आती है। एक झोपड़ी में रहने वाला या धोती कुर्ता पहनने वाला व्यक्ति भी आधुनिक होता है। आधुनिकता हमें जड़ों से अलग नहीं करती बल्कि हमारी जड़ों को और मजबूत करती है अर्थात् अपनी सभ्यता संस्कृति और समाज से जुड़कर उन्नति व विकास का मार्ग प्रशस्त करना ही आधुनिकता है। हम जो उक्त काव्य संग्रह का विश्लेषण करेंगे। उसमें हमने मनुष्य जीवन की समस्या, समाज के प्रति उसकी दृष्टि में बदलाव, आधुनिकता के प्रभाव के कारण उसके स्वभाव में परिवर्तन जैसे स्वार्थी होना, एकाकीपन की ओर बढ़ना, स्वयं को अजनबीयत की ओर ले जाना, धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन, जिसके कारण वह अपने स्व और अस्तित्व की खोज के लिए निरंतर संघर्षरत है। इससे कभी-कभी वह निराश व कुंठित भी हो जाता है। विचार बिन्दु - 'चौराहे पर' काव्य संग्रह का विश्लेषण करने से पूर्व हमें विश्लेषण को भी समझ लेना चाहिए। किसी कठिन या जटिल चीज (जैसे पदार्थ, विचार या स्थिति) को उसके छोटे-छोटे हिस्सों या घटकों में तोड़कर विस्तार से समझना जिससे उसकी प्रकृति कार्य प्रणाली या आंतरिक संबंधों को गहराई से जाना जा सके। किसी साहित्य या कविता के विषय, रूप और संदर्भ को गहराई से समझा जा सके। मोटे तौर पर किसी कृति के विश्लेषण का अर्थ उसके विभिन्न अवयवों को अलग-अलग तथा उनके पारस्परिक संबंधों का विवेचन, दूसरे गुढ़ या संदिग्ध तात्पर्यों की संपूर्ण कृति या लेखक की मूलधारणाओं के आधार पर निश्चित करना है। कवि केदारनाथ कोमल का कविता संग्रह 'चौराहे पर' मनुष्य जीवन के अनेक दौरों एवं प्रक्रिया से गुजार कर ऐसे चौराहे पर लाकर खड़ा कर देता है जहां से वह अपने लक्ष्य की ओर आसानी से जा सके। कवि ने अपने इस काव्य संग्रह में मानव जीवन की खोई हुई मर्यादा एवं मनुष्य के संघर्षशील जीवन को बहुत ही सुंदर शब्दों में यथार्थपरक अभिव्यक्ति की है। इस काव्य संग्रह में आधुनिक मनुष्य के कुंठा एवं संत्रास की मार्मिक अभिव्यक्ति है। चौराहे पर कविता मानवता से प्रेरित है यही मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य को आधुनिकता बोध से जोड़ता है। यहां कवि ने आधुनिक मनुष्य की भटकती हुई मानवीयता को चित्रित किया है –

**"ज़िन्दगी का आईना/चटख गया है
आस्था का उजाला/भटक गया है
आशा पूछती है निराशा से
अब किधर का इरादा है।"⁵**

उक्त कविता में कवि ने मनुष्य जीवन की खंडित होती हुई तस्वीर तथा उसके आस्था और विश्वास को टूटते हुए देखा है। जीवन जो दर्पण के समान था जिस पर प्रतिबिंबित होती छवि में आत्मीयता और स्पष्टवादिता थी वह आज खंडित हो गई है। जीवन के विश्वास रूपी दर्पण पर दरारें पड़ गई हैं आस्था का शुभ अमलिन प्रकाश टूटती आस्था और खंडित होते हुए तिमिर की गलियों में भटक गया है, परंतु आज भी उसके भीतर के विश्वास का प्रकाश प्रकाशमान है। वह बराबर नए संकल्पों को लेकर प्रश्न कर रहा है। वह निराशा के आवरण से निकलकर आशा के पथ पर अपनी सम्पूर्ण चेतना और संकल्प के साथ बढ़ाना चाहता है।

'लोग' शीर्षक कविता कवि की यथार्थवादी कविता है आज आधुनिकता की अंधी दौड़ में प्रत्येक मनुष्य दौड़ रहा है और इस दौड़ में हर इंसान अकेला पड़ गया है। इसी भावना की अभिव्यक्ति करते हुए कवि कहता है कि -

**"भीड़ की तनहाई में डूबे हुए
जिंदगी की बेवफाई से उबे हुए लोग।
आहो की धुंध में भटके हुए
आँख में आँसू की तरह अटके हुए लोग।
दुःखों की आग में सुलगते हुए**

वक्त की भट्टी में/इस्पात की तरह पिघलते हुए लोग।"⁶

इस कविता के अंतर्गत कवि ने मनुष्य के संत्रास एवं कुंठापूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति की है। यहां लेखक का मूल उद्देश्य मनुष्य के सामाजिक जीवन की स्थिति को उजागर करना है। वह अपने लक्ष्य पूर्ति हेतु इधर-उधर भटक रहा है जिसके कारण वह समाज में तन्हाई और ऊबन महसूस कर रहा है। वह समाज से कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है। 'दीवारें' कवि की व्यंगात्मक कविता है। यह आधुनिक समाज की यथार्थपरक तस्वीर प्रस्तुत करती है। आज मनुष्य ने अपने चारों ओर दीवारें खड़ी कर रखी हैं। ये नाम की दीवारें, काम की दीवारें, जाति की दीवारें, धर्म की दीवारें और भाषा की दीवारें। आधुनिक मनुष्य का जीवन इतना गिर गया है कि ये उसके मार्ग में साधक न बनकर बाधक बनती जा रही है। जिससे समाज की गति रुक सी गई है। आधुनिकता इसका विरोध करती है। कवि इस व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कहता है -

**"दीवारें आगे पीछे दायें बायें दीवारें
दीवारों के पीछे दीवारें/दीवारों के पीछे, पीछे, पीछे
और और और...../दीवारें दीवारें दीवारें
किसे पुकारें/कब तक पुकारें।"⁷**

आधुनिकता के साथ-साथ इस संग्रह में राष्ट्र प्रेम की भावना को भी देखा जा सकता है। 'इंकलाब' 'देश' शीर्षक से लिखित कविताओं में उनकी देश के प्रति आस्था और विश्वास को देखा जा सकता है। देश जिन हालात से दो-चार हो रहा है वह भी किसी से छिपा नहीं है। महंगाई, भ्रष्टाचार, धार्मिक उन्माद अपने पूर्ण चरम पर है। हमारे राजनेता किस स्तर की राजनीति कर रहे हैं यह भी किसी से छिपा नहीं है। जनता को मूर्ख बनाना यह अपना राजनीतिक धर्म मान रहे हैं। 'देश' कविता को यदि वर्तमान परिवेश से जोड़कर देखा जाए तो आज देश बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहा है राजनीतिक गिरावट इस कदर आ गई है कि हर दल देश की हर समस्या को धर्म, जाति तथा लाभ हानि के चश्मे से देखने की चेष्टा कर रहा है जिसके कारण समाज में सामाजिक दूरियां बढ़ती जा रही हैं। देश मूल मुद्दों से भटक कर नुकीली वह पथरीली पगडंडी पर निकल पड़ा है।

**"अंधेरी, पथरीली, नुकीली, पगडंडियों पर
चलता, गिरता, संभलता, उठाता, बढ़ता हुआ देश
महंगाई चोर बाजारी अवसर वादिता
भ्रष्टाचार की बीमारी में
तडफता, हांफता, कांपता, जलते बुझता
पिघलता हुआ देश।"⁸**

'वेनाम सा दर्द' कविता के माध्यम से कवि ने आधुनिक समाज की बड़ी ही युग सापेक्ष तथा व्यंगपूर्ण व्यंजन प्रस्तुत की है। यह कविता आधुनिकता की एक विशेषता अजनबीयत को अपने अंदर समेटे हुए है। वर्तमान समय में हर इंसान अपनी जिंदगी को सही दिशा देने का अथक प्रयास कर रहा है लेकिन आधुनिकता की इस भाग दौड़ में उसे केवल निराशा ही हाथ लग रही है। जिसके कारण उसका जीवन रूपी कमल मुरझा गया है लेकिन वह अपनी जिंदगी को फूलों की तरह महकना चाहता है।

**"जिंदगी से भीख मांगी थी / फूल तो किया
दो कांटे भी न मिले/ एक वेनाम सा दर्द
दे दिया और कहा/ यही सब कुछ है।"⁹**

'चौराहे पर' काव्य संग्रह में संकलित 'एक अनुभूति' कविता समाज का जीता जागता चित्र प्रस्तुत करती है क्योंकि वर्तमान युग में मनुष्य जिस घुटन व धुंध भरे माहौल में जी रहा है। उसकी आंखों में केवल बदहवासी और बेबसी ही झलकती है। वह अपने हृदय में एक गुमनाम उदासी संजोए बैठा है। उसकी आस्था का तारा जगमगाता है लेकिन वह भी इस अंधकार पूर्ण वातावरण में लुप्त हो जाता है। 'एक अनुभूति' कविता की पंक्तियाँ -

**"निगाहों में बदहवासी/ क्षितिज के आर पार गुमनाम उदासी
दिल जोर से धडका/ और धडककर रह गया
एक जगमगाता तारा/ टूटकर लकीर बनाता हुए
अंधेरे में गुम हो गया।"¹⁰**

आधुनिकता के इस युग में जहां मनुष्य समय के हाथ का खिलौना है। उसके मस्तिष्क में हर समय एक भयानक तूफान उठता रहता है इस आधुनिक समाज में सभी मानवीय मूल्यों का हास हो चुका है। कवि 'घर में इंकलाब' कविता के माध्यम से परंपरागत रूढ़ियों तथा समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों के प्रति विद्रोह की बात करता है वैसे इस कविता में परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय है तथा दूसरी ओर भविष्य की ओर भी उन्मुख है कवि का यह इंकलाब क्रांति का द्योतक है जो परिवर्तन का संकेत है और यह परिवर्तन ही आधुनिकता का प्रतीक है 'घर में इंकलाब' कविता के कुछ पंक्तियाँ -

**"बेटे से अक्सर सवाल किया है मैंने
इंकलाब का क्या मतलब है?
कहां से सीखा यह नारा?
क्या स्कूल में यही सिखाया जाता है?
क्या सचमुच इंकलाब आयेगा?
आयेगा तो कब आयेगा?"¹¹**

वर्तमान समय में कुछ लोग एक इंकलाब लाने की चेष्टा कर रहे हैं। यह सनातनी होने का इंकलाब है। यह तथाकथित लोग हर चीज को धार्मिक चश्मे से देखकर समाज में वैमनस्य से पैदा करके लोगों के दिलों में एक दूसरे के प्रति नफरत भर रहे हैं। अब इंसान को इंसानियत नजर नहीं आती बल्कि धर्म की दृष्टि से इंसानियत और राष्ट्रभक्ति को परिभाषित किया जा रहा है इससे कुछ लोगों को कुछ समय के लिए लाभ हो सकता है लेकिन भविष्य में समाज को केवल और केवल हानि ही होगी। चौराहे पर संग्रह की कविताओं में सामाजिक यथार्थ भी देखने को मिलता है कवि ने बहुत ही व्यंग्यात्मक शैली में समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत की है। आज का मनुष्य केवल अपने लिए जी रहा है। वह समाज में किसी की मदद करने को भी तैयार नहीं है। वह केवल अपनी दुनिया में मग्न है।

**"चीथड़ी में दुबका मजदूर का बच्चा
उठते ही मांगेगा बासी रोटी का टुकड़ा
कौन देगा रोटी उसे
भूखों के देश में?"¹²**

'जिन्दगी' कविता मनुष्य के संघर्षशील जीवन को प्रस्तुत करती है। इस कविता में कवि ने मनुष्य की जिंदगी को निम्नलिखित उपमानों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कवि इस कविता के माध्यम से यह प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहा है कि आज के मनुष्य की जिंदगी केवल खोखली शान बनकर रह गई है आज सारे मानव मूल्य खत्म हो चुके हैं मनुष्य मनुष्यता से गिर चुका है -

"जिन्दगी/किसी गीत की
उखड़ी-उखड़ी तान है।
दम्भ के/ आभूषणों से सजी
खोखली शान है।"¹³

निष्कर्ष - अंततः कवि कोमल जी के समस्त काव्य में हमें सामाजिक यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, स्वच्छन्दतावाद तथा प्रगतिवादी चेतना आदि सभी दृष्टियों को देखा जा सकता है। जो आधुनिकता बोध के आयाम है। मनुष्य अपने संघर्षमय जीवन में अस्मिता की खोज में भटक रहा है। जो आधुनिकता की ही विशेषता है क्योंकि आधुनिकता एक वैचारिक एवं मानवीय दृष्टि का साहित्यिक नाम है केदारनाथ कोमल का 'चौराहे पर' काव्य संग्रह में संकलित कविताओं में उनकी जीवन यात्रा जो आधुनिकता मौलिकता तथा युग सापेक्षता के अनुरूप जीवन की सच्चाई, ईमानदारी तथा आत्मविश्वास और लोगों के भोगे हुए जीवन का सहज योग बनकर कवि को आस्थावान और चेतनावान बनाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची -

1. केदारनाथ कोमल- चौराहे पर (काव्य संग्रह) (भूमिका से) प्र.सं. 1968
2. डा. अजब सिंह- आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ, प्र.स.1975, पृष्ठ 8.
3. डा. इन्द्रनाथ मदान, निबंध और निबंध, प्र.सं.1966. पृष्ठ 96.
4. डा. इन्द्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिन्दी साहित्य, प्र.सं.1973 पृष्ठ 19.
5. केदारनाथ कोमल, चौराहे पर (काव्य संग्रह) प्र.सं.1968 पृष्ठ 11.
6. वही पृष्ठ 12.
7. वही पृष्ठ 17.
8. वही पृष्ठ 36.
9. वही पृष्ठ 37.
10. वही पृष्ठ 41.
11. वही पृष्ठ 61.
12. वही पृष्ठ 47.
13. वही पृष्ठ 54.

Citation of this article: खान, . मोहम्मद . इमरान . 'आधुनिकता की दृष्टि से: 'चौराहे पर' एक विश्लेषण'. Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies, vol. 1, no. 3, Sept. 2025, pp. 233–36,
<https://doi.org/10.5281/zenodo.22934073>.